Lesson - 1

संगीत,स्वर की परिभाषा व प्रकार 1- अलंकार

संगीत

गायन ,वादन तथा नृत्य इन तीनो कलाओ के योग को संगीत कहते है।

आरोह - स्वरों के चढ़ते हुए क्रम को आरोह कहते है।
जैसे - सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह - स्वरों के उतरने हुए क्रम को अवरोह कहते है।
जैसे - सां नि ध प म ग रे सा

पकड़ - वह छोटा से छोटा स्वर समूह जिससे राग की पहचान होती हे उसे पकड़ कहते है।
जैसे - नि रे ग,रे ग में प रे ,नि रे सा ,ये राग यमन का पकड़ हे ,इससे राग यमन की पहचान होती है।

संगीत की उत्पति

संगीत की उत्पत्ति ब्रह्मा द्वारा हुई - ब्रह्मा ने आध्यात्मिक शक्ति द्वारा यह कला देवी सरस्वती को दी। सरस्वती को 'वीणा पुस्तक धारणी' कहकर और साहित्य की अधिष्ठात्री माना गया है। इसी आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा सरस्वती ने नारद को संगीत की शिक्षा प्रदान की।

संगीत के मुख्य सात स्वर होते हैं जिनके नाम षडज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद हैं। साधारण बोलचाल में इन्हें सा, रे, ग, म, प, ध तथा नि कहा जाता है।

Mittsure

अलंकार --- आरोह - सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह - सां नि ध प म ग रे सा

स्वर-

संगीत में वह शब्द जिसका कोई निश्चित रूप हो और जिसकी कोमलता या तीव्रता अथवा उतार - चढ़ाव आदि का ,सुनते ही ,सहज में अनुमान हो सके,स्वर कहलाता है। भारतीय संगीत में सात स्वर हैं, जिनके नाम हैं - षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत व निषाद।

स्वर के प्रकार -

1-शुद्ध
2-विकृत

1-शुद्ध स्वर - बारह स्वरों में से सात मुख्य स्वरो को शुद्ध स्वर कहते हैं।
शुद्ध स्वर के नाम - सा,रे,ग,म,प,ध,नी

2-विकृत स्वर - जो स्वर अपने निश्चित स्थान से थोड़ा उत्तर जाते है वह विकृत स्वर कहलाते हैं।t
विकृत स्वर के नाम - रे ग ध नी म

स्वर का महत्व-

भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रत्येक राग में दो स्वर महत्वपूर्ण माने गए हैं। सबसे महत्वपूर्ण स्वर को वादी स्वर कहते हैं और उसके बाद दूसरे सबसे महत्वपूर्ण स्वर को संवादी स्वर कहते हैं। संवादी स्वर का महत्व वादी स्वर से कम होता है।